

हम पंछी उन्मुक्त गगन के



हम पंछी उन्मुक्त गगन के

जन्म : 1915

मृत्यु : 2002

जन्मस्थल : उन्नाव , उत्तरप्रदेश

अध्यापक , कुशल प्रशासक , चिंतक , विचारक

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

कविता में कवि पक्षी को माध्यम बनाकर अपना विचार प्रकट किया है ।

पक्षी के अस्वतंत्र अवस्था को सामने रखते हुए , कवि प्रत्येक मनुष्य की आज़ादी का रस लेकर रहने की अपनी इच्छा और अधिकारों को पाने की मज़बूत दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया है ।

जिस प्रकार पक्षी में उड़ान की क्षमता है उसी प्रकार मनुष्य में विवेचन की क्षमता है । पक्षी आकाश में उड़ान करने की स्वतंत्रता चाहता है , कवि अपना विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता चाहते हैं ।

व्याख्या

1 . हम पंछी टूट जाएँगे

पक्षी स्वतंत्र होकर आसमान में उड़ना पसंद करता है ।

पक्षी कहता है -

हम स्वतंत्र रूप से आसमान में उड़ने वाले पक्षी हैं। पिंजरे में बंद होकर हम गा नहीं पाएँगे । पिंजरे के स्वर्ण सींक से टकराकर प्रसन्नता

से उड़ने वाले पंख टूट जाएँगे ।

2. हम बहता मैदा से

पक्षी अपनी इच्छा से उड़कर खान - पान करता है ।

पक्षी कहता है -

हम बह जानेवाला पानी अर्थात नदी या झरने का पानी पीने वाले हैं यदि हम पिंजरे में बंद होंगे तो भूख और प्यास के कारण मर जाएँगे । बंद पिंजरे में स्वर्ण कटोरी में परोसने वाले मैदा से कई अच्छा और स्वादिष्ट नीम का कड़वा फल है ।

3. स्वर्ण ----- के झूले

कहीं पर बंद रहने से पक्षी अपना अस्तित्व भूल जाता है।

पक्षी कहता है -

हम प्रकृति का आनंद ले कर जीना चाहते हैं । सोने के लडी के बंधन में रह - रह कर हम अपने लक्ष्य और उड़ान

की क्षमता , सब भूल जाते हैं । ऊँचे वृक्ष के ऊपर के डाल में बैठकर झूलने का आनंद केवल सपनों में ही ले सकता है।

4. ऐसे थे के दाने

पक्षी स्वतंत्र रूप से उड़कर अपनी छोटी और बड़ी इच्छाएँ पूरी करना चाहता है ।

पक्षी कहता है -

हमें आसमान की सीमा तक उड़कर जाना है । लाल चोंच खोलकर सूरज के किरणों से चमकते ,अनार के दाने जैसे दिखनेवाले तारक को अपनी इच्छानुसार चुगना है ।

5. होती सीमाहीन की डोरी

पक्षी विषम परिस्थितियों के सामना करके अपने लक्ष्य तक पहुँचने का साहस अथवा उन्नति को पाने का अपना अटूट निश्चय प्रकट करता है ।

पक्षी कहता है -

आसमान के अनंत सीमा तक उड़ना चाहता हूँ मतलब ऊँचाई तक पहुँचना चाहता हूँ । जहाँ पृथ्वी और आकाश का मिलन होता है । उसके लिए अपने अंत तक परिश्रम करने को तैयार हूँ। अर्थात लक्ष्य पाने के परिश्रम में यदि उसके साँसे रुक भी जाए माने वह मर भी जाए तो भी उसे वह स्वीकार है ।

6. नीड़ न न डालो

प्रकृति में जन्म हुए सभी जीव जंतुओं में अपने आप जीवन व्यतीत करने की क्षमताएँ सन्निहित रहती हैं और उन में किसी दूसरे के बिना अपने लक्ष्य पाने का साहस भी है। प्रकृति के हर जीव को इसे पहचानकर अपने मर्यादाओं के सीमा में रहना चाहिए। अर्थात् दूसरों की क्षमताओं को मानना है और स्वतंत्र रूप से जीने का उसका जो अधिकार है उस पर विघ्न नहीं डालना चाहिए।

पक्षी कहता है -

हमें रहने के लिए किसी भी घोंसला देने की जरूरत नहीं है। चाहे आप पेड़ की टहनी का वह सहारा ही मिटा दें पर स्वतंत्र रूप से उड़ने की क्षमता रखनेवाले पंख से जन्मा है इसलिए कम से कम उस उड़ान पर बाधा मत डालिए।

संदेश – प्रकृति में जन्म लिए सभी जीव-जंतुओं को अपनी क्षमताओं को समझकर अपनी इच्छा से स्वतंत्रता से जीने का अधिकार है। इसलिए हर एक को दूसरों की स्वतंत्रता का मान रखना है।

काव्यात्मक युक्ति - उपमा अलंकार का प्रयोग